पूर्वोत्तर प्रभा
(सिक्किम विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक शोध पत्रिका)
Journal Home Page: **http://supp.cus.ac.in/**

पूर्वोत्तर भारत : भाषाई विविधता एवं संकट

कुलदीप सिंह
हिंदी विभाग नेहू, शिलांग
ईमेल :kuldp85@gmail.com

शोध सार : पूर्वोत्तर भारत अपनी भौगोलिक और सांस्कृतिक संरचना के कारण न केवल भारत में बल्कि विश्व में भी विख्यात है। यहाँ के प्रदेश की माजुली द्वीप, उपानन्द द्वीप, मासीनरम तथा कंचनजंघा इसे विशेषता प्रदान करती है। यह एक जनजाति बहुल प्रदेश है। यहाँ निवास करने वाली जनजातियाँ विभिन्न भाषा परिवार की लगभग 220 भाषाओं का प्रयोग करती हैं। भाषाओं की यह विविधता आज भी अध्येताओं के लिए किसी चुनौती से कम नहीं। राज्य विशेष में कौन सी भाषा बोली जाती है, उसका संबंध किस भाषा परिवार से है, उनकी वर्तमान स्थिति और भाषाओं के लुप्त होने का कारण आदि का अध्ययन यहाँ किया गया है।

बीज शब्द : भाषा परिवार, जनजाति, लिपि, साहित्य, संपर्क भाषा, मौखिक भाषा, हिन्दी,

मूल लेख

पूर्वोत्तर भारत से आशय है पूर्व तथा उत्तर में फैला भारत। इस दृष्टि से देखे तो 7 बहनों के नाम से मशहूर पूर्वोत्तर के सात राज्य -असम, नागालैंड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय, अरुणांचल प्रदेश के अलावा सिक्किम तथा पश्चिम बंगाल राज्य के कुछ जिले इसके अंतर्गत आते हैं। यहाँ के प्रदेश का इतिहास, जनसमूह का गठन, भाषिक स्थिति, जनमानस का आचरण, धार्मिक विश्वास, लोक विश्वास तथा मान्याताएँ आदि का अध्ययन आज भी

अध्येताओं के लिए चुनौतीपूर्ण है। यही कारण है कि पूर्वोत्तर भारत मानव शास्त्रियों के लिए जीता-जागता संग्रहालय है तो भाषा शास्त्रियों के लिए अध्ययन का स्वर्ग।

'कोस कोस पर बदले पानी, चार कोस पर वाणी' कहावत को चरितार्थ करती पूर्वोत्तर भारत में तिब्बत-चीनी परिवार, आग्नेय परिवार, भारतीय आर्य भाषा परिवार तथा ताई कदाई भाषा परिवार की लगभग 220 भाषाएँ बोली जाती हैं। यहाँ की भाषा प्रयोग के बारे में बताते हुए विजय राघव रेड्डी लिखते हैं "यहां भारतीय आर्य भाषा परिवार की असमिया, बंगला हिंदी और नेपाली भाषाओं के अतिरिक्त आस्ट्रो एशियाटिक परिवार की कुछ प्रमुख भाषाएं तथा तिब्बती बर्मी उप परिवार की अनेक भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं।"[1] इन भाषा परिवारों में तिब्बत चीनी परिवार की भाषा बोलने वालों की संख्या यहाँ सर्वाधिक है। यहाँ नागा, असमिया, बोडो, बंगाली, खासी, गारो, मिजो, त्रिपुरी, मणिपुरी, नेपाली, भूटिया तथा न्यीसी आदि भाषाएं बोली जाती हैं।

असम

असम में भारोपीय परिवार के भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषा का प्रयोग किया जाता है। इसी परिवार की सिल्हेटी भाषा, दक्षिण असम के साथ-साथ त्रिपुरा तथा सिक्किम में भी बोली जाती है। असमिया भाषा के क्रियोलिक रूप में नागालैंड की नागामी भाषा तथा अरूणाचल की नेफ़ामी भाषाएँ बोली जाती हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ पर चीनी- तिब्बत भाषा परिवार की, तिब्बत- बर्मी परिवार की बोड़ो, राभा, कारबी, तिवा, देओरी, डिमासा आदि भाषाएँ भी प्रयोग में लाई जाती है। असम में 'असमिया साहित्य' को विशिष्ट पहचान दिलाने में भट्टदेव, दामोदरदेव, पुरुषोत्तम ठाकुर, शंकरदेव (कीर्तन घोषा) तथा माधव देव (नाम घोषा) का महत्वपूर्ण योगदान है। शंकरदेव ने 'रामायण' तथा 'भगवतगीता' का असमिया भाषा में अनुवाद किया। इनके द्वारा प्रयुक्त ब्रजावली तदयुगीन हिन्दी के सर्वभारतीय रूप से मिलती जुलती है। सन 1794 ई० में श्रीकांत सूर्य विप्र ने तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस' को असमी में छंद-बद्ध अनुवाद किया। वर्तमान में असमिया साहित्य को व्यापक फ़लक प्रदान

करने वालों में लक्ष्मीनाथ बेजबरूआ, हेमचन्द गोस्वामी, रजनीकांत बरदलै, हितेस्वर बरबरूआ, बिरेन्द्र कुमार डेका, बंदिता फुकन, चित्र महंत, मामोनी रायसम गोस्वामी, चक्रेस्वर भट्टाचार्य, चित्र महंत, सुमति तालुकदार, नवारूढ़ वर्मा, छगन लाल जैन, रामेंद्र शर्मा, भूपेन्द्रनाथ राय चौधरी आदि का विशेष योगदान है। बोड़ो साहित्य के विकास में 'बरथूनलाई आफ़ाद' (बोड़ो साहित्य सभा) का विशेष योगदान है। यहाँ बांग्ला तथा हिन्दी भी पर्याप्त मात्रा में बोली जाती है।

नागालैंड

यहाँ पर निवास करने वाली 16 जनजातियों की अपनी विशिष्ट भाषा तथा पहचान है। नागालैंड में आओ, अंगामी, लोथा, तङ्खुल, सेमी, कोन्यक, रेंगमा आदि भाषाएं बोली जाती हैं जो तिब्बती-बर्मी परिवार से संबंधित है। अंगामी यहाँ की प्रमुख भाषा है तथा अंग्रेजी आधिकारिक भाषा है। संपर्क भाषा के रूप में पूरे प्रदेश में नागामीज भाषा का प्रचलन है जिसमें असमिया, नागा, बांग्ला, हिन्दी और नेपाली का मिश्रित रूप दिखाई देता है। ई० डब्लू० क्लार्क द्वारा लिखित 'माटी जिलुबा ओत्ज्ब टाजूम' (1883) पहली प्रकाशित पुस्तक मानी जाती है। नागालैंड में सबसे अधिक धर्म संबंधी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं। यहाँ के साहित्य को समृद्ध करने वालों में रिवेंबुर्ग, ग्रियोंसोन, सुप्ली, हयलु, टेमसुला आओ, बिनिलिंदोह, इस्टराइन, इलालू, मोनालिसा चंककिजा, हेकली, झीमोमी आदि प्रमुख रचनाकार हैं।

मणिपुर

संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल मणिपुर इस राज्य की प्रमुख भाषा है जिसका प्रयोग इम्फाल, थोवल, विशनपुर जिलों में बतौर मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। इसे मैतेइ भाषा भी कहा जाता है। मणिपुरी भाषा को शामिल किया गया है। इसकी अपनी लिपि मीतेईमएक है। 20वीं शताब्दी में रचित ख्वाइरक्पम के उपन्यास 'लवंग लता' से

मणिपुरी साहित्य का शुभारंभ होता है। हिजम अंगङ्घल सिंह, चोबा सिंह, लंबाम कमाल सिंह की रचनाओं ने मणिपुरी साहित्य को गति दी है।

मिजोरम

मिजोरम राज्य में मिज़ो, चकमा, हमार आदि भाषाओं का प्रयोग किया जाता है। मिजोरम में अधिकतर लोग मिज़ो भाषा का प्रयोग करते हैं। यहाँ के बुजुर्गों को मिज़ो भाषा के अलावा दूसरी भाषा नहीं आती है किन्तु नई पीढ़ी के लोगों ने अंग्रेजी तथा हिन्दी को व्यापक पैमाने पर समझना आरंभ कर दिया है। मिज़ो भाषा को 'लुशाई भाषा' के नाम से भी जाना जाता है। मिज़ो साहित्य के विकास में अधिथांगा, पसेना, लालसियामा, लाल गुर लियाना आदि साहित्यकारों का विशिष्ट योगदान है। यहाँ की भाषा यहाँ निवास करने वाली विविध जनजातियों-राल्ते, पाइते, पोई, सुक्ते, पंखुप, जहाव, फलाई, मोलबेम, ताउते, लखेर, दलाड; खुड.लई इत्यादि के लोक साहित्य में देखने को मिलता है।

त्रिपुरा

त्रिपुरा एक छोटा पर्वतीय प्रदेश है। यहाँ पर लगभग 19 आदिवासी समूह निवास करती हैं जिनमें त्रिपुरी, रियङ्, नोआतिया, जामतिया, चकमा, हालाम मग, कुकी, गारो, लुशाई आदि प्रमुख हैं। बांग्ला, अंग्रेजी तथा काकबराक इस प्रदेश की आधिकारिक भाषा है। काकबराक भाषा तिब्बत बर्मन भाषा समूह का एक उप-समूह है। काकबराक भाषा बोड़ो के साथ-साथ डिमासा भाषा के साथ निकटता से जुड़ी हुई है। संविधान की आठवीं अनुसूची में बांग्ला भाषा को स्थान दिया गया है।

मेघालय

मेघालय राज्य में आग्नेय या मुंडा परिवार की खासी, जयंतिया तथा गारो आदि भाषाएं बोली जाती हैं। अंग्रेजी यहाँ की राजभाषा है। ईशाइ मिशनरियों के आने के पूर्व खासी

में लिखित साहित्य प्राप्त नहीं होते हैं। कृष्णचंद्र पाल ने 1813 ई० में 'न्यू टेस्टामेंट' का अनुवाद खासी भाषा में किया जिसकी लिपि बांग्ला थी। थॉमस जॉन ने 1842 ई० में खासी भाषा में एक प्राइमरी पुस्तिका लिखी जिसका नाम था 'का किताब बात हिकाई का खिटेन कासिया'। रोमन लिपि में लिखी गई यह पुस्तिका खासी भाषा और साहित्य की आरंभिक बिन्दु के समान थी। खासी साहित्य को समृद्ध करने वालों में डी० एस० लिंदोह, खाङ्ग्दूप, शोशोथाम, राबोन सिंह, एच० इलियास, प्रिमरोज गेटपोह, जॉन राबर्ट्सन, जीवन रॉय, हरिचरण रॉय, राबोन सिंह, जिंग फवार, राबोन सिंह बेरी (का जिंगस्नेंग) मोरखा जोसेफ, सोसो थाम (1873-1940), अमजद अली आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। जॉन राबर्ट्सन को खासी भाषा का जनक माना जाता है। गारो भाषा का प्रयोग गारो पहाड़ी के लोगों के साथ असम व त्रिपुरा के कुछ भागों में बोली जाती हैं। गारो भाषा तिब्बती-बर्मा परिवार की भाषा है। इसकी कई बोलियाँ प्रचलित हैं। जयंतिया, प्नार या पनार भाषा का संबंध आष्ट्रों-एशियाटिक भाषा परिवार की खसिक शाखा से है जो जोवाई क्षेत्र में बोली जाती है। ख़ासी तथा गारो का अध्ययन पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय में एम. ए स्तर तक पढ़ाया जाता है।

अरूणाचल प्रदेश

अरूणाचल प्रदेश में 25 से अधिक जनजातियाँ निवास करती हैं। इनके द्वारा आदि, आपातानि, न्यीसी, अबोर, नोकते, मिसिंग, हरुस्सों, फाके आदि भाषाएँ बोली जाती हैं। इनकी भाषाओं में इतनी भिन्नता है कि एक समुदाय की भाषा दूसरे समुदाय के लोग नहीं समझ पाते हैं। संपर्क भाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा यहाँ पर ताई-कदाई भाषा परिवार की खामती, ताई फाके आदि भाषाएँ भी किंचित मात्रा में बोली जाती हैं। "फकियाल मुख्यतः चांगलांग जिले के बरदूमसा और मियाओं इलाक़े में रहते हैं। कुछ फकियाल डिब्रूगढ़ जिले में बसे हुए हैं। हीनयानी मत को मानने वाली फकियाल जाति की धार्मिक, भाषागत और सांस्कृतिक दृष्टि से सिमफ़ों के साथ समानता है। प्राचीन जमाने में

टाई-फाके के नाम से जाने जानेवाले फकियाल जनसंख्या की दृष्टि से बहुत कम हैं। फिर भी इनकी अपनी लिखित भाषा है जिसमें 18 स्वर तथा 17 व्यंजन हैं।”[2]

सिक्किम

सिक्किम की मुख्य भाषा नेपाली है। नेपाली के अलावा लेप्चा, भूटिया, लिंबू, हिन्दी तथा अंग्रेजी व्यापक पैमाने पर बोली एवं समझी जाती हैं। लिंबू, लेप्चा, भूटिया, तामाङ, शेर्षा, मगर आदि 11 भाषाएँ राजभाषा के रूप में व्यवहार में लाई जाती हैं। लिंबू भाषा का संबंध तिब्बती-बर्मन परिवार से है। सिक्किमी भाषा, दक्षिणी तिब्बती भाषाओं में से एक है। इसे 'सिक्किमी तिब्बती', 'भूटिया', 'ड्रांजोके' आदि नामों से जाना जाता है। सिक्किम में प्रचलित लेप्चा भाषा की अपनी लिपि है जो भारत की संकटग्रस्त भाषाओं में एक है। सिक्किम तथा दार्जिलिंग के अतिरिक्त नेपाल तथा भूटान में यह भाषा बोली जाती है।

अतः हम कह सकते हैं कि पूर्वोत्तर भारत की भाषाओं में विविधता है। संपर्क भाषा के रूप में पूर्वोत्तर समाज हिन्दी भाषा का प्रयोग करता है जबकि अंग्रेजी यहाँ की आधिकारिक भाषा है। भाषा के साथ- साथ पदों के क्रम में भी यहाँ विविधता परिलक्षित होती है। प्रत्येक भाषा की भाषिक संरचना में कुछ न कुछ अंतर अवश्य होता है जो वाक्य भेद, पदों के क्रम आदि में देखने को मिलता है। हिंदी में पदों का क्रम कर्ता-कर्म-क्रिया है जबकि अंग्रेजी में कर्ता-क्रिया-कर्म है। असमिया, नेपाली, त्रिपुरी आदि भाषाएं जो कि भारतीय आर्य भाषा परिवार की भाषाएं हैं तथा मणिपुरी, बोड़ो, गारो, राभा, कारबी, आओ, लोथा, मिज़ो, चकमा आदि भाषाएं जो तिब्बत चीनी परिवार की भाषाएं हैं, में पदों का क्रम कर्ता-कर्म-क्रिया है। जबकि आस्ट्रोएसियाटिक भाषा परिवार से संबंधित खासी, जयंतिया आदि भाषाओं का पद क्रम कर्ता-क्रिया-कर्म है। बहुत ही कम मात्रा में बोले जाने वाली असम तथा अरूणाचल प्रदेश की खामती तथा फाके भाषाओं का पद क्रम निश्चित नहीं रहता। हिंदी भाषा की ही तरह यहाँ की ज्यादातर भाषाओं में दो लिंग का प्रयोग होता है किंतु खासी तथा मणिपुरी आदि भाषा में चार लिंग-पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, उभयलिंग तथा नपुसंक लिंग का प्रयोग होता है।

भाषा की विविधता यहाँ की समृद्धि है तो दिन प्रति दिन इनकी संख्या में ह्रास सबसे बड़ी समस्या। इसका मुख्य कारण यहाँ की अधिकांश भाषाओं का मौखिक होना है। मौखिक होने की वजह से कई भाषाएँ अपना अस्तित्व खो रही हैं। लिखित रूप में भी इसकी सीमाएं सीमित है। विश्व की संकटग्रस्त और लुप्त प्रायः भाषाओं के बारे में यूनेस्को की एक रिपोर्ट(2009) का हवाला देते हुए प्रो० कृष्ण कुमार गोस्वामी लिखते हैं कि "भारत की 196 भाषाएँ संकटग्रस्त और लुप्त प्रायः भाषाएँ हैं जिनमे 80 भाषाएँ सिर्फ पूर्वोत्तर भारत की हैं। इन 80 भाषाओं में अरूणाचल प्रदेश की 36 संकटग्रस्त भाषाओं की श्रेणी में आती हैं। असम में राभा, कारबी, देओरी आदि भाषाएँ, मणिपुर में कबूई, कुकी, कोन्यक, ताङ्खुल, हालते आदि भाषाएँ, अरूणाचल प्रदेश में आदी, मोनपा, बुगुन, खामती, चुंग, खंबा, आपातानी, न्यीसी, सिंहफ़ों, साजालोई, जाखरींग, शेरदुक्येन आदि भाषाएँ, नागालैंड में अंगामी, लोहा, सेमा, फोम, इम्चुद्रर आदि भाषाएँ, मिजोरम में लुशाई, चकमा आदि भाषाएँ, मेघालय में आलोंग, रुगा, गद्गते, प्नार, लाइनोग्नम आदि भाषाएँ, त्रिपुरा में हमर, पैते, जमातिया आदि भाषाएँ और सिक्किम में लेप्चा,भूटिया आदि भाषाएँ असुरक्षित, संकटग्रस्त, अति संकटग्रस्त और लुप्त प्रायः भाषाएँ मानी गई हैं। इनका प्रयोग या तो बहुत ही कम है या कभी- कभार आंशिक रूप में होता है और वह भी बुजुर्गों में।"[3] हरी राम मीणा ने भी अपनी पुस्तक 'आदिवासी दुनिया' में लुप्त होती भाषाओं पर चिंता प्रकट की है। बो भाषा के संदर्भ में वे लिखते हैं " माह फरवरी 2010 के मध्य का एक त्रासद समाचार यह रहा कि अंडमान में 85 वर्षीय एक महिला की मृत्यु के साथ दुनिया की एक भाषा हमेशा के लिए अस्तित्वहीन हो गई। इस महिला का नाम बोआ सीनियर था जो एकमात्र सदस्य थी इस भाषा को बोलने वाली। 'बो' भाषा के नाम से जानी जाती रही वह भाषा दुनिया की प्राचीनतम भाषा में एक थी।"[4] यह महिला जीवन के अंतिम पड़ाव में एकदम लाचार सी दिखाई पड़ती थी क्योंकि यह भाषा बोलने वाली वह एक मात्र महिला थी।

निष्कर्ष:

निष्कर्षतः कह सकते हैं कि पूर्वोत्तर भारत अपनी भाषिक विशेषता के कारण देश के अन्य स्थानों से भिन्न है। यहाँ विभिन्न भाषा परिवार की लगभग 220 भाषाएँ बोली जाती हैं। इनकी अपनी भाषाओं में तो इनका साहित्य समृद्ध है किंतु अनुदित रूप में न होने की वजह से बहुसंख्यक समाज इनसे अपरिचित है। पूर्वोत्तर का साहित्य लिखित की अपेक्षा मौखिक ही अधिक है। मौखिक होने के कारण कई भाषाएँ लुप्त प्राय हो गई हैं। इन भाषाओं को लुप्त होने से बचाने के लिए यह जरूरी है कि इन भाषाओं को लिपिबद्ध किया जाए, इनका प्रचार-प्रसार किया जाए और साथ ही इनमें रोजगार की तलाश की जाए ताकि इनकी उपादेयता बनी रही। ऐसा होने पर इन भाषा को बोलने वाले भी देश की मुख्य धारा से जुड़कर राष्ट्र की समृद्धि में अपना योगदान दे सकेंगे।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

1 रेड्डी, विजय राघव. (1994). संस्कृति संगम-उत्तर पूर्वांचल. दिल्ली : कालिंगा पब्लिकेशन. पृ.10

2 पांडे, राजेश चन्द्र. (संपा०). (2011). शोध-धारा(पूर्वोत्तर भारत विशेषांक). उरई-जालौन : शैक्षिक एवं अनुसंधान संस्थान. वर्ष 2011, पूर्णांक 22. पृ.16

3 शुक्ल, श्री प्रकाश. (संपा०). (2017). राजभाषा-भारती. नई दिल्ली : राजभाषा विभाग, वर्ष 39, अंक 152. पृ.81-82

4 मीणा, हरीराम. (2013). आदिवासी दुनिया. नई दिल्ली : नेशनल बुक ट्रस्ट. पृ.129